Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

सितम्बर 2020 (प्रथम)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,121
विक्रम संवत् 2077
दयानन्दाब्द 197

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 16 अंक 15

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2020 (प्रथम)
1 से 15 सितम्बर, 2020 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. जिज्ञासा-विमर्श (व्याकरण व शास्त्र) 5
3. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 7
4. ईश्वर का सत्यस्वरूप तथा सृष्टि में हर पदार्थ के प्रयोजन का उद्देश्य 8
5. जीवित माता-पिता ही सच्चे पितर हैं 10
6. वेदों के आचरण से ही मनुष्य को अभ्युदय एवं नि:श्रेयस प्राप्त होते हैं 11
7. बलिदान व संघर्ष की गाथा 13
8. वेद में प्रभात वेला का चमत्कार 15
9. समाचार-प्रभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदमन्त्र

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥

ऋग्वेद 5.82.5, यजुर्वेद 30-3, तैत्तिरीय ब्राह्मण 2-4-6-3, तैत्ति० आरण्यक 10.10.2

अन्वय-हे देव सवितः विश्वानि दुरितानि परा सुव। यद् भद्रम् (स्यात्) तत् नः आसुवः॥

अर्थ-(देव सवितः) हे प्रेरक देव! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराइयों को (परा सुव) दूर कीजिए। (यत्) जो (भद्रम् [स्यात]) कल्याणकारक वस्तु हो (तत्) वह (नः) हमारे लिए (आसुव) दिलाइए।

व्याख्या-यह ऋषि दयानन्द का प्रियतम मन्त्र है। अपने वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में ऋषि ने इसी मन्त्र से ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की है और प्रत्येक मतमतान्तर का मानने वाला मनुष्य इस मन्त्र से बिना संकोच के प्रार्थना कर सकता है। इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है। सभी 'दुरित' से बचना चाहते हैं और 'भद्र' को ग्रहण करना चाहते हैं।

इस मन्त्र में तीन विशेष शब्द हैं जिनके अर्थ विचारणीय हैं। एक 'सविता', दूसरा 'दुरित' और तीसरा 'भद्र'। प्रार्थना का अर्थ है प्र+अर्चना। 'प्र' का अर्थ है 'प्रकर्षेण' तेजी से, विशेष उत्कण्ठा से। अर्चना का अर्थ मांगना। प्रार्थी उसी वस्तु को उत्कण्ठा से मांगता है जिसका मूल्य उसको ज्ञात होता है और जिसको पा जाना उसकी शक्ति के भीतर है। भूखा भिखारी रोटी मांगता है, अमेरिका की राज की प्रधानता नहीं चाहता। अज्ञात या अप्राप्य वस्तु की कल्पना हो सकती है, कभी-कभी इच्छा भी, परन्तु इसको प्रार्थना नहीं कह सकते। प्रार्थना के लिए आन्तरिक उत्कण्ठा या विह्वलता आवश्यक है। उसके लिए यह जानने की आवश्यकता है कि वह क्या वस्तु है जिसकी हमको मांग है? बच्चा भूख से व्याकुल होकर चिल्लाता है। यह उसकी सबसे सच्ची प्रार्थना होती है। '**अर्थ**' बिना समझे '**प्रार्थना**' करना अपने को धोखा देना है। जिस वस्तु को तुम जानते ही नहीं उसको प्राप्त करने की इच्छा ही कैसे हो सकती है और यदि वह वस्तु प्राप्त भी हो जाए तो उससे तुमको क्या लाभ हो सकता है? संसार में लोग मोक्ष या स्वर्ग के लिए सबसे अधिक प्रार्थना करते हैं। वे नहीं जानते कि मोक्ष क्या वस्तु है या स्वर्ग कैसा और कहां है? इसलिए ऐसी अज्ञात प्रार्थनाएं मोक्ष के स्थान में बन्ध और स्वर्ग के स्थान में नरक की प्राप्ति ही कराती हैं। इसलिए प्रार्थी को 'दुरित' और 'भद्र' के अर्थों को जानना चाहिए।

दुरित=दुः-इत। 'इण् गतौ' से 'क्त' प्रत्यय करके 'इत' बना। 'इत' से 'दुः' लगा देने से 'दुरित' बना। सायण ने 'दुरितम्' का अर्थ किया है 'अज्ञानात् निष्पन्नम्' (ऋग्वेद भाष्य 1-23-22) और 'दुरितानि' का 'पापानि' (ऋग्वेद भाष्य 2-27-5)। आप्टे ने 'दुरित' का अर्थ किया है Difficult (कठिन), Sinful (पाप), A bad couese (बुरा मार्ग)। धातु और प्रत्यय पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि मार्ग में जो कुछ बाधाएं उपस्थित होती हैं वे सब '**दुरित**' हैं। आप कहीं पर पहुंचने के लिए कोई मार्ग खोजते हैं। यदि मार्ग अच्छा है तो यात्रा सुगम होती है, परन्तु मार्ग में कांटे हों तो यह 'दुरित' है। यदि ईंट-कंकड़ के रोड़े हों तो यह 'दुरित' है। यदि ऊबड़-खाबड़ हो तो यह 'दुरित' है। यदि झाड़-झंखाड़ हो तो यह 'दुरित' है। यदि आपके पैरों में थकावट आ जाए और आपको यात्रा के बीच में ही बैठ जाना पड़े यह 'दुरित' है। यदि मार्ग में डाकू मिल जाएं तो यह 'दुरित' है। सारांश यह कि आपकी जीवन यात्रा में जो बाधाएं पड़ती हैं वे सब 'दुरित' हैं। मंजिल एक है, मार्ग भी एक है, परन्तु बाधाएं अर्थात् 'दुरित' बहुत-सी हैं। आपकी जीवन यात्रा आपके जन्म से प्रारम्भ होती है, आरम्भ से ही 'दुरित' भी आ उपस्थित होते हैं। शैशवकाल के अनेक रोग (Juvenile diseases) आपके मार्ग को रोकते हैं, यह 'दुरित' है। बड़े होने पर जिस कार्य में आप हाथ डालते हैं, उसी में कोई-न-कोई वस्तु बाधक हो जाती है-कभी आपकी अविद्या, कभी आपका प्रमाद, कभी आपका लोभ, कभी किसी बाहरी शक्ति का विरोध। ये सभी तो 'दुरित' हैं, और इनमें यदि एक छोटा-सा भी दुरित शेष रह गया तो आपकी जीवन

यात्रा असम्भव हो सकती है। आपका समस्त शरीर सुदृढ़ और रोगरहित हो, केवल पैर की सबसे छोटी अंगुली के एक किनारे पर सरसों के बराबर फोड़ा हो जाए, आप देखेंगे कि आपका सारा काम ठप्प हो जाएगा। यदि आप राजा हैं और आपने अपने किले की दीवारें बहुत चौड़ी और मजबूत बनाई हैं, जिनको तोड़ना, किसी भी शत्रु की शक्ति से बाहर है और यदि आपके किले के कई मील के सुदृढ़ घेरे में एक स्थान पर एक हाथ की लम्बाई में एक कमजोर जगह छूट गई तो उस हाथ भर जगह में होकर भी शत्रु का प्रवेश हो सकता है तथा आपका साम्राज्य एक क्षण में अस्त-व्यस्त हो सकता है। इसीलिए वेद में **'दुरितानि'** के साथ **'विश्वानि'** विशेषण लगाया गया। आप जब भगवान् से **'दुरितों'** के दूर करने की प्रार्थना करते हैं तो **'विश्वानि'** पर विशेष बल है।

'यद् भद्रम्'-जो भद्र या कल्याणकारक हो! भद्र क्या है? 'दुरितों' का दूर करना ही भद्र है। महामुनि गौतम ने न्यायदर्शन (1.1.21-22) के दो सूत्रों द्वारा इस रहस्य को समझाया है। **'बाधनालक्षणार्थं दुःखम्', 'तदत्यन्तविमोक्षो अपवर्गः'** अर्थात् रुकावट ही दुःख है और दुःख को ही 'दुरित' कहते हैं। (दुः+ख=दुःख, दुः+इत=दुरित)। 'ख' नाम 'इन्द्रिय' का है और 'आकाश' का भी। आकाश में ही गति संभव है। इन्द्रियां भी आकाश में ही गतिवती हो सकती हैं। जिन वस्तुओं का इन्द्रियों की नैसर्गिक प्रगति में रुकावट होती है वही दुःख है, वही दुरित है, उससे 'अत्यन्त-विमोक्ष' का नाम अपवर्ग है अर्थात् कोई रुकावट शेष न रह गए। रुकावटों के निःशेष होने पर जो स्थिति होगी, वही 'भद्र' है। उसी की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

इस मन्त्र में ईश्वर को 'देव सवितः' कहकर पुकारा गया है। 'सविता' (सवितृ) शब्द के अर्थों पर विशेष विचार करना है। 'सविता' का सम्बन्ध 'परा सुव' और 'आसुव' दोनों से है, क्योंकि ये तीनों शब्द एक ही धातु 'षू' के सूचक हैं। 'सविता' का अर्थ है 'प्रसविता' अर्थात् प्रेरक। मोनियर विलियम्स ने अपने 'बृहद् संस्कृत कोष' में 'सव' का अर्थ दिया है, "One who sets in motion, impels, an instigator, a stimulator." सविता का अर्थ है, a stimulator, rouser, vivifier. हमने ये अंग्रेजी-अर्थ इसलिए दिए हैं कि साधारण हिन्दी भाषा में हम सब प्रसव, सविता, प्रसविता के मुख्य धात्वर्थ की उपेक्षा कर जाते हैं। ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के 82वें सूक्त में 9 मंत्र हैं। उन सबकी देवता 'सविता' है और हर मन्त्र में सविता के साथ 'षू' धातु के किसी न किसी रूप का प्रयोग हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि 'सविता' और उसके सम्बन्धी 'परासुव' और 'आसुव' विशेष अर्थों के सूचक हैं।

परमात्मा के जितने नाम वेदों में अथवा अन्यत्र गिनाये गये हैं उन सब का सम्बन्ध प्राणिवर्ग से है। 'नाम' होता ही इसलिए है कि नाम लेने वाला 'नामी' के साथ अपना सम्बन्ध निर्धारित कर सके। जिसका किसी के साथ सम्बन्ध नहीं उसके नाम व संज्ञा की आवश्यकता नहीं। **'संज्ञायते अनया' 'संजानते अनया वा' सा 'संज्ञा'** जिसके द्वारा ज्ञान हो सके, वह संज्ञा है। ज्ञान के लिए ज्ञाता या चेतन जीव की आवश्यकता है। जीव और ईश्वर के सम्बन्ध अनन्त हैं। महाभाष्य में मुनिवर पतञ्जलि ने लिखा है-**'एकशतं षष्ठ्यर्थाः'** (1.1.48) अर्थात् सम्बन्ध तो सैकड़ों होते हैं। विशेष अवस्था में विशेष सम्बन्ध को बताने की आवश्यकता होती है। परमात्मा 'सविता', 'प्रसविता' या प्रेरक है, इसका क्या अर्थ है?

संकुचित अर्थ में 'सविता' सूर्य को भी कहते हैं। सूर्य भी प्रसविता या प्रेरक है। रात के व्यतीत होने पर सूर्य की किरणें जब वस्तुओं पर पड़ती हैं तो हर पदार्थ के भीतर एक प्रकार की प्रेरणा या जागृति उत्पन्न हो जाती है। सूर्य किसी नई चीज का उत्पादन नहीं करता। पदार्थों में जो शक्तियां निहित थीं, वे ही जाग उठती हैं, नया जीवन आ जाता है। अंग्रेजी के शब्द stimulator या vivifier आन्तरिक भावों को ठीक-ठीक व्यक्त करते हैं। कोई मनुष्य प्रातःकाल अपने जीवन में सूर्य के प्रकाश से आई हुई इस जागृति का अनुभव कर सकता है, अन्य प्राणधारी या वनस्पति आदि जड़ पदार्थ भी इस बात के द्योतक हैं। सूर्य की किरणें यदि गुलाब पर न पड़तीं तो गुलाब न खिलता। सूर्य की किरणें गुलाब नहीं हैं, सूर्य का और गुलाब का कारण-कार्य का सम्बन्ध नहीं है, सूर्य से गुलाब नहीं बना, न गुलाब बिगड़कर सूर्य में विलीन होगा, परन्तु गुलाब की आन्तरिक बीजरूप अविकसित शक्तियों को विकास करने को उद्यत करने में सूर्य की किरणें प्रेरक हैं। उनके द्वारा भीतर से कुछ ऐसा परिवर्तन होता है कि गुलाब के समस्त अन्तर्निहित गुण अव्यक्त से व्यक्त हो जाते हैं। दूसरा दृष्टान्त आप विद्युत् का

ले सकते हैं। विद्युत्-तरंग को भी सविता या प्रेरक कह सकते हैं। एक ही विद्युत्-कोष से भिन्न-भिन्न यंत्रों का सम्बन्ध होता है। तरंग खुलते ही भिन्न-भिन्न यन्त्रों को प्रेरणा मिलती है और वे प्रगतिशील हो जाते हैं-आटे की चक्की आटा पीसने लगती है, लकड़ी काटने की मशीन लकड़ी काटने लगती है, छापेखाने की मशीन छापने लगती है। मशीनें अलग-अलग हैं परन्तु प्रेरणा सबको उसी विद्युत्-तरंग से मिलती है।

इन लौकिक उदाहरणों की आन्तरिक भावनाओं पर विचार कीजिए और फिर उनको इस मन्त्र में प्रयुक्त 'सविता' शब्द पर घटाइए।

परमात्मा किसी प्राणी को बलात् आज्ञा नहीं देता कि तुम ऐसा करो, तुम ऐसा मत करो। प्राय: धार्मिक क्षेत्रों में ऐसी धारणा है कि ईश्वर जो चाहता है, प्राणियों से कराता है, परमात्मा जिसको चाहता है ठीक मार्ग पर लगाता है, जिसको चाहता है गुमराह कर देता है। यदि ईश्वर इसी प्रकार अपनी आज्ञाओं को बलात् जीवों पर थोपता तो जीवों की प्रार्थना व्यर्थ जाती। किसका सामर्थ्य था कि वह ईश्वर के आदेशों को टाल सके। किसी ने कहा है कि-

जाको प्रभु दारुण दु:ख देहीं। वाकी मति पहले हरि लेंहीं॥

कुरान में बार-बार दुहराया गया है कि अल्लाह जिसको चाहता है ठीक मार्ग पर लगाता है और जिसको चाहता है गुमराह करता है। यदि परमात्मा की इच्छा ही है कि संसार में दुरित रहें तो दुरितों के दूर करने और उनके स्थान में 'भद्र' प्राप्त कराने का प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु परमात्मा के लिए इस प्रकार की भावना वैदिक भावना नहीं है। परमात्मा न किसी जीव को बनाता है, न उसको किसी विशेष कार्य के लिए मजबूर करता है। सूर्य की किरणें जब मिर्च के बीज पर पड़ती हैं और साथ ही साथ उसके पास ही बोये हुए गाजर के बीज पर पड़ती है तो उनकी प्रेरणा तो दोनों के लिए होती हैं, परन्तु मिर्च का बीज तो मिर्च बनाता है और गाजर का गाजर। एक में कड़वापन, दूसरे में मीठापन। किरणें न कड़वापन उत्पन्न करती हैं न मीठापन। केवल प्रेरणा देती हैं।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें पदार्थों को जागृति देती हैं उसी प्रकार आस्तिक्य-भावना भी प्रत्येक प्राणी के भीतर जागृति उत्पन्न कर देती है। वही स्फूर्ति 'दुरितों' के निराकरण के लिए शक्ति प्रदान करती है। रोग के कीटाणु स्वस्थ शरीर पर भी आक्रमण करते हैं और रुग्ण शरीर पर भी परन्तु स्वस्थ शरीर स्वस्थता की सहायता से आक्रमण करने वाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है, जैसे पत्थर पर पड़ी हुई जलती हुई दियासलाई, दियासलाई बुझ जाती है, पत्थर ज्यों का त्यों रह जाता है। वही दियासलाई फूस के ढेर पर पड़कर भड़क उठती है। एक अस्वस्थ शरीर विशूचिका के कीटाणु को लेकर न केवल स्वयं ही मृत्यु का ग्रास बनता है अपितु अन्य शरीरों को भी अपने साथ नष्ट कर देता है। आस्तिक मनुष्य और आस्तिक्यहीन मनुष्य के आत्मा में यही भेद है। दुरित तो अपने आक्रमण सभी पर करते हैं, परन्तु जो प्रार्थी दुरितों की प्रकृति को समझता हुआ परमात्मा की प्रेरणा से अपने को सुसज्जित पाता है उसके दुरित शीघ्र पराजित हो जाते हैं। सबल होते हुए भी प्रभावशून्य हो जाते हैं, उनकी प्रगति कुंठित हो जाती है।

जो मनुष्य परमात्मा के सवितृ-भाव को न समझकर परमात्मा से वस्तुविशेष की मांग करते हैं उनकी प्रार्थना निष्फल जाती है। परमात्मा मुफ्त में किसी को सदावर्त या खैरात नहीं बांटता। प्राय: धनाढ्य लोग खैरात में बहुत से भिखारियों को मुफ्त भोजन देते हैं। इससे दानियों को ख्याति तो प्राप्त हो जाती है परन्तु भिखारियों के सामर्थ्य में कोई भेद नहीं पड़ता। यह वह धनाढ्य खैरात न बांटकर केवल प्रेरणा करे तो वे ही भिखारी थोड़े दिनों में अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और दूसरों को प्रेरणा करने के योग्य बना सकते हैं। वैदिक विधि से 'सविता' के प्रेरकत्व को समझता हुआ 'प्रार्थी' भिखारी नहीं है। वह मुफ्त कोई चीज नहीं मांगता। वह ईश्वर के प्रेरकत्व पर विश्वास करके दुरितों को दूर करने का सामर्थ्य चाहता है। दुरितों का दूर करना ही भद्र की प्राप्ति है। रोग का पराभव ही शक्ति का संचार है। ज्यों-ज्यों पाप की भावना कम होती है, कल्याण की भावना उत्पन्न हो जाती है। **(साभार-वेद-प्रवचन)**

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

-रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

जिज्ञासा-विमर्श (व्याकरण व शास्त्र)

❑ आचार्य सोमदेव, मलारना चौड़, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

गतांक से आगे....

इस सृष्टि उत्पत्ति के समय को सुनकर पाश्चात्य और आधुनिक लोग अत्यधिक आश्चर्य करते हैं और विश्वास

भी नहीं करते। उन्हें यह जिज्ञासा होती है कि कालगणना का इतना हिसाब कैसे रखा गया? इसके उत्तर में उन्हें एक व्यवहार में प्रचलित प्रमाण सम्पूर्ण देश में उपलब्ध हो जायेगा। भारतीयों ने वर्षों की बात तो छोड़िये, पल और प्रहर तक का हिसाब रखा है। ज्योतिषीय पंचांगों में यह आज भी उपलब्ध है। यज्ञ आदि धार्मिक कृत्यों में संस्कार के समय एक संकल्प की परम्परा है उसमें **'आर्यावर्त्ते वैवस्वतमन्वन्तरे कलियुगे अमुकप्रहरे'** आदि बोलकर संकल्प किया जाता है। इस प्रकार परम्पराबद्ध रूप से समय का हिसाब सुरक्षित है।

उपलब्ध भारतीय वंशावलियों के अनुसार ब्रह्मा को आदि वंशप्रवर्तक माना जाता है और मनु उससे दूसरी पीढ़ी में परिगणित है। इस प्रकार इस सृष्टि में जब से मानव सृष्टि का आरम्भ हुआ है, स्वायम्भुव मनु उस आदिसृष्टि या आदि समाज के व्यक्ति सिद्ध होते हैं।''

यह मनुस्मृति के भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र जी का मत है। यह मत महर्षि दयानन्द के अनुकूल व तर्कसंगत है। इससे सिद्ध होता है कि मनुस्मृति की प्राचीनता आदि सृष्टि से है।

इस विषय में आधुनिक विद्वानों का मत भिन्न मिलता है। वे पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित होते हुए हमारे वैदिक साहित्य को ईसा के पूर्व वा ऊपर ही देखते हैं। इस विषय को विस्तार से देखने के लिए विशुद्ध मनुस्मृति का अवलोकन करें।

जिज्ञासा 4. आपके व अन्य विद्वानों के जो लेख 'परोपकारी' पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित होते हैं, उनमें हमारी वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित ग्रन्थों का संदर्भ दिया जाता है। यह मेरा दुर्भाग्य है कि उनके बारे में अधिक ज्ञान नहीं रखता और कदाचित् कोई इस प्रकार की पुस्तक भी नहीं है, जिसमें उन ग्रन्थों के नाम, उनके प्रकार, लेखक/रचयिता तथा उनमें क्या ज्ञान छिपा हुआ है, प्रकाशित हों। मेरे प्रश्न इस प्रकार हैं–

(क) ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं, उनके क्या नाम हैं, उनके रचयिता/लेखक कौन हैं, प्रत्येक ग्रन्थ में क्या ज्ञान है?

(ख) इसी प्रकार श्रुतियाँ कितनी हैं, उनके क्या-क्या नाम हैं, उनके लेखक/सृजनकर्त्ता कौन हैं, उनमें किस विषय का ज्ञान है?

(ग) अब तक कितने मनु हुए हैं, उनके क्या नाम हैं, उनमें से प्रत्येक ने किस प्रकार का ज्ञान दिया? श्रीमद्भगवद्गीता में योगिराज श्रीकृष्ण ने चौदह मनु को रेफर किया है, परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं कहा।

(घ) उपनिषद् ग्यारह हैं, उनके नाम मेरे पास हैं, लेकिन प्रत्येक उपनिषद् में किस प्रकार का ज्ञान है, वह नहीं मिलता या प्राप्त है।

(ङ) हमारे चार वेद हैं और वे चारों वेद ज्ञान के भण्डार हैं, लेकिन श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में सामवेद को ही अपनी दिव्य विभूति क्यों कहा है?

आपके वैशेषिक दर्शन तथा अन्य विद्वानों के शास्त्रों तथा वेदों से सम्बन्धित लेख जो कि 'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित होते हैं, वे ज्ञान के भण्डार होते हैं तथा मार्गदर्शक का भी योगदान देते हैं।

–डॉ० वेदप्रकाश गुप्ता, 1-3-3, सेक्टर-3-4, ज्ञानदीप, वाशी, नवी मुम्बई-400703

समाधान–(क) मानव संस्कृति, सभ्यता व ज्ञान के भण्डार, वेद व वेदानुकूल ऋषियों के ग्रन्थ हैं। वेद स्वयं ईश्वर द्वारा बनाये हुए अपौरुषेय हैं, जिससे वे स्वत: प्रमाण हैं, अर्थात् वेद के लिए स्वयं वेद ही प्रमाण हैं। जैसे सूर्य को दिखाने के लिए अन्य किसी प्रकार के साधन की आवश्यकता नहीं होती, सूर्य तो अपने आप दिखने में समर्थ है, वैसे ही वेद को जानें।

वेद मन्त्र भाग हैं, मन्त्र संहिताएं हैं, अर्थात् मूल मन्त्र भाग वेद कहलाते हैं। उनके उन मन्त्रों के जो व्याख्या करने वाले ग्रन्थ हैं, वे ब्राह्मण कहलाते हैं। आप इन्हीं ब्राह्मण ग्रन्थों के विषय में जानना चाहते हैं। ब्राह्मणग्रन्थ कितने हैं, उनके लेखक कौन हैं, उनके विषय क्या हैं, यह लिखने से

पहले यह देख लेते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थ किनको कहते हैं? इनकी अपर संज्ञाएं क्या हैं आदि।

महर्षि दयानन्द ने ब्राह्मण ग्रन्थ बताने के लिए अपनी पुस्तक 'अनुभ्रमोच्छेदन' में लिखा है-''जिससे ये ऐतरेय आदि ग्रन्थ ब्रह्म अर्थात् वेदों के व्याख्यान भाग हैं, अर्थात् **ब्रह्मणां वेदानामिमानि व्याख्यानानि ब्राह्मणानि। अर्थात् शेष भूतानि सन्तीति।**'' इससे महर्षि कहना चाहते हैं कि जो ऐतरेय आदि वेदमन्त्रों की व्याख्या करने वाले ग्रन्थ हैं, वे ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते हैं।

और भी-''वेद का अपर नाम ब्रह्म है।-शतपथ 7.1.15 में कहा है-'ब्रह्म वै मन्त्रः', अतः वेद मन्त्रों की व्याख्या प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों की ब्राह्मण संज्ञा है।'' 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ यज्ञ भी है। इस आधार पर मन्त्रों की व्याख्या करने के साथ-साथ यज्ञ में उनका विनियोग करने तथा कर्मकाण्ड की व्याख्या एवं विवरण प्रस्तुत करने के कारण भी उन्हें ब्राह्मण नाम से अभिहित किया गया है। भट्टभास्कर ने कर्मकाण्ड तथा मन्त्रों की व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को ब्राह्मण कहा है-

'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः'

(तैत्तिरीय संहिता 1.5.1 का भाष्य) स.भा.

ब्राह्मण ग्रन्थों के ही अपर नाम इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी हैं। इन ब्राह्मण ग्रन्थों में जो (देवासुराः सांपत्ता आसन्) अर्थात् देव (विद्वान्) असुर (मूर्ख) ये दोनों युद्ध करने को तत्पर हुए थे-इत्यादि कथा भाग है, उसमा इतिहास नाम है जिसमें-

'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्',
'आत्मा वा इदमेकमेवाग्र आसीन्नान्यत् किंचन मिषत्'
'आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास',
'इदं वा अग्रे नैव किंचिदासीत्।'

इस प्रकार के वर्णन पूर्वक जगत् की उत्पत्ति को जिसमें कहा है, वह भाग पुराण कहलाता है।

'कतपा मन्त्रार्थसामर्थ्यप्रकाशकाः।' जो वेदमन्त्रों के अर्थ अर्थात् जिनमें द्रव्यों के सामर्थ्य का कथन किया है, उनका नाम कल्प है।

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य, जनक, गार्गी, मैत्रेयी आदि की कथाओं का नाम 'गाथा' है।

जिनमें नर अर्थात् मनुष्यों ने ईश्वर, धर्मादि पदार्थ विद्याओं और मनुष्यों की प्रशंसा की है, उनको नाराशंसी कहते हैं। यह वर्णन दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेद संज्ञा विचार प्रकरण में किया है।

अब आपके मूल प्रश्न पर आते हैं-ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं? आज वर्तमान में चार ब्राह्मण मुख्य रूप से प्रचलित हैं, किन्तु ब्राह्मणों की संख्या इतनी ही है, ऐसा नहीं है। विद्वानों का ऐसा मानना है कि वेद की सभी शाखाओं के अपने-अपने ब्राह्मण थे। उनमें से अनेक के आज नाम तक ज्ञात नहीं हैं। जो ब्राह्मण आज उपलब्ध हैं, वे लगभग अठारह हैं और जो उपलब्ध नहीं हैं, केवल जिनके नामों का पता मिलता है, उनकी संख्या लगभग इक्कीस है। इन ब्राह्मण ग्रन्थों, लेखकों अथवा प्रवक्ताओं के नाम कुछ को छोड़कर प्रायः नहीं मिलते हैं। इसमें कारण ऋषियों के यश कामना से रहितता होना लगता है।

प्रसिद्ध प्रचलित चार ब्राह्मण ऐतरेय, शतपथ, ताण्ड्य और गोपथ ब्राह्मण हैं। अब कौन-सा ब्राहाण किस वेद का है, उस वेद के कितने ब्राह्मण हैं-यह लिखते हैं। ऋग्वेद के मुख्य तीन ब्राह्मण हैं-

1. ऐतरेय ब्राह्मण-इस ब्राह्मण का प्रवक्ता इतरा का पुत्र ऐतरेय महीदास था। इस ऐतरेय ब्राह्मण में आठ पंचिकाएं हैं। प्रत्येक पंचिका में पांच अध्याय हैं। सम्पूर्ण ब्राह्मण में चालीस अध्याय हैं।

2. कौषीतकि ब्राह्मण-इस ग्रन्थ का परिमाण तीस अध्यायों का है। इस ग्रन्थ के प्रवचनकर्त्ता कौषीतकि अथवा शाङ्खायन इन दोनों में से कोई एक है, ऐसी विद्वानों की मान्यता है।

3. शाङ्खायन ब्राह्मण-इस ग्रन्थ में तीस अध्याय हैं। इस ग्रन्थ के नाम से पता लगता है कि इसके प्रणेता शाङ्खायन रहे होंगे।

यजुर्वेद के भी तीन ब्राह्मण उपलब्ध होते हैं-

1. माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण-यह ब्राह्मण सबसे अधिक प्रचलन में है। इसके नाम के अनुसार इसमें एक सौ अध्याय हैं। इस ब्राहाण में चौदह काण्ड, एक सौ अध्याय, चार सौ अड़तीस ब्राह्मण और सात हजार छः सौ चौबीस कण्डिकाएं हैं। इसका दूसरा नाम वाजसनेय ब्राह्मण भी मिलता है। इसके रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य रहे हैं।

क्रमशः अगले अंक में....

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

18. जो व्यक्ति अमित्र अर्थात् अहितकारी व्यक्ति को मित्र बनाता है और मित्र बनाने योग्य हितकारी को अपना शत्रु मानकर उससे द्वेष करता है और उसका नाश करने के लिए दुष्ट कर्म करता है।

19. जो व्यक्ति अपने कार्य को अस्त-व्यस्त करता रहता है।
20. जो व्यक्ति स्वयं कर्म न करके केवल भृत्यों पर विश्वास करता है।
21. जो सबके प्रति सन्देह करता है।
22. जो शीघ्र करने योग्य कार्यों में भी विलम्ब करता है।
23. जो मनुष्य क्रोध और प्रसन्नता, अभिमान और लज्जा, दुष्टता तथा मनमानी करने की प्रवृत्ति के कारण अपने जीवनोद्देश्य को नहीं समझता है।
24. जिस व्यक्ति के भविष्य में करने योग्य कार्यक्रम, विचार और निश्चय को शत्रु लोग पहले से ही जान लेते हैं।
25. जो व्यक्ति अपने भावी कार्यों को सफल करने में गर्मी-सर्दी, भय-प्रीति, सम्पन्नता-विपन्नता को बाधक मानता है। अर्थात् इन परिस्थितियों के आने पर वह घबरा जाता है।
26. जिस व्यक्ति की बुद्धि धर्म और अर्थ के प्रतिकूल चलती है।
27. जो व्यक्ति विषयवासना में लिप्त रहकर धर्म की उपेक्षा कर पारलौकिक सुख के स्थान पर ऐहिक सुखों को प्राप्त करने को महत्त्व प्रदान करता है।
28. जो व्यक्ति अपने पितरों (जीवित माता-पिता, दादा-दादी आदि वृद्धों) और देश के रक्षकों, विद्वानों आदि का श्रद्धापूर्वक अन्न, पान, वस्त्रादि से सत्कार नहीं करता है।
29. जो व्यक्ति चेतन देव परमेश्वर की उपासना और जड़ देव अग्नि, वायु, जलादि का यज्ञ (होम) द्वारा उपकार नहीं करता है।
30. जो सदैव स्नेही तथा हितकारी मित्रों की संगत में नहीं रहता है।
31. जो यथाशक्ति कार्य न करके ख्याली पुलाव ही बनाते रहते हैं।
32. जो किसी भी वस्तु तथा व्यक्ति की अकारण उपेक्षा एवं तिरस्कार करते रहते हैं।
33. जो व्यक्ति किसी के घर अथवा सभा में बिना बुलाये चला जाता है और बिना पूछे बहुत बोलता है।
34. जो विश्वसनीय व्यक्तियों पर विश्वास न करके अविश्वसनीय व्यक्तियों पर विश्वास करता है।
35. जो दूसरों की बातों को धैर्यपूर्वक नहीं सुनता और दूसरे के आशय को भी शीघ्रता से नहीं समझ पाता।
36. जो पराये कार्य में बिना सलाह मांगे टांग अड़ाता रहता है।
37. जो मनुष्य स्वयं दूषित आचरण करता हुआ अपने जैसे उसी दोष के कारण दूसरे की निन्दा करता है।
38. जो असमर्थ होते हुए भी दूसरों पर क्रोध करता है।
49. जो व्यक्ति अपनी शक्ति का बिना विचार किये आलस्य के कारण ऐश्वर्य को बिना यत्न के प्राप्त करना चाहता है।
40. जो व्यक्ति शासन करने के अयोग्य पर शासन करता है अर्थात् जो आज्ञा नहीं मानता उस पर आज्ञा चलाता है।
41. जो अयोग्य व्यक्ति के निकट बैठता है।
42. जो कृपण व्यक्तियों की संगत में आनन्द का अनुभव करता है।
43. जो अल्प धन-सम्पत्ति, विद्या अथवा ऐश्वर्य (राज्यादि) को प्राप्त होकर उद्दण्डता दिखाता है और नम्रता पूर्वक व्यवहार नहीं करता।
44. जो व्यक्ति कार्य को प्रारम्भ तो कर देता है परन्तु थोड़ी-सी बाधा उपस्थित होने पर उसे मध्य में छोड़ देता है।
45. जो जितेन्द्रिय नहीं है और निर्माणात्मक कार्यों के स्थान पर विध्वंसात्मक कार्यों में लगा रहता है।
46. जो अपना सम्मान होने पर फूलकर कुप्पा हो जाता है और अपमानित होने पर अत्यधिक दु:ख का अनुभव करने लगता है।

क्रमश: अगले अंक में....

ईश्वर का सत्यस्वरूप तथा सृष्टि में हर पदार्थ के प्रयोजन का उद्देश्य

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

ईश्वर-स्तुति-प्रसंग-महाभारत काल के पश्चात् सर्वप्रथम-युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर

का सत्यस्वरूप तथा ईश्वर द्वारा निर्मित पदार्थों के प्रयोजन का उद्देश्य संसार के समक्ष प्रस्तुत करके वेदों के ईश्वर परक अर्थों में सृष्टि प्रयोजन का अदभुत विज्ञान का ज्ञान बताकर संसार का कल्याण किया है।

ईश्वर का स्वरूप और उसके विशेषण-ईश्वर सचिदानन्द स्वरूप-निराकार-सर्वशक्तिमान-न्यायकारी-दयालु-अजन्मा-अनन्त-निर्विकार-अनादि-अनुपम-सर्वाधार-सर्वेश्वर-सर्वव्यापक-सर्वान्तर्यामी-अजर-अमर-अभय-नित्य-पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापद्धिम-। कविर्मनीषी परिभू:स्वयम्भूर्याथातथ्यतो अर्थोन्वयदधाच्छास्वतीमय: समाभ्य:॥ (यजुर्वेद)

ईश्वर सर्वव्यापक है, जगत उत्पादक है, शरीर रहित है, शारीरिक विकार रहित है, नाड़ी और नस के बन्धन से रहित है, सूक्ष्मदर्शी है, कवि है, ज्ञानी है, पाप से रहित है-स्वयम्भू है, अनादि है। प्रजा के लिए ठीक-ठीक कर्मफल का विधान करता है तथा हमारे चारों तरु ऊपर-नीचे, आगे-पीछे विद्यमान है, और सम्पूर्ण सृष्टि को नियमित चलाता है, ग्रह उपग्रह समस्त अन्तरिक्ष को चलायमान रखता है तथा ऋतुओं का निर्माण प्राणिमात्र के अनुसार करता है और प्राणों को जीवित रखने के लिए वायु, अग्नि, जल, अन्न इत्यादि पदार्थ बिना कुछ लिए देता रहता है। प्रत्येक प्राणी का विकास अर्थात् जन्म, मृत्यु, कर्मफल सभी का न्याय कृता है और बिना पक्षपात के सभी कार्य करता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपष्ठयति।
सर्वभुतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥ (यजुर्वेद)

अर्थात् जो कोई सम्पूर्ण चराचर जगत् को परमात्मा में ही देखता है और सम्पूर्ण जगत् में परमात्मा को देखता है वह कभी निन्दित नहीं होता है और परमात्मा के नौ गुण जो मानव सदा अपने हृदय में रखता है, वह सदैव शाश्वत सुख को प्राप्त होता है।

नौ गुण-1. ब्रह्म सर्वदेशीय है। 2. ब्रह्म एकत्व है। 3. ब्रह्म भुक्रम है। 4. ब्रह्म भुद्धम् है। 5. ब्रह्म अपापविद्धम् है। 6. ब्रह्म कवि है। 7. ब्रह्म मनीषी है। 8. ब्रह्म स्वयम्भू है। 9. ब्रह्म फलदाता है। ये ब्रह्म के नौ गुण हैं।

सृष्टि में प्रत्येक पदार्थ के प्रयोजन या उद्देश्य-सृष्टि के जड़ जगत् में प्रत्येक वस्तु के निर्माण का प्रयोजन है और किसी उद्देश्य से ईश्वर ने उसका निर्माण किया है और प्रयोजन का होना सिद्ध करता है कि उसके निर्माण में कोई-कोई चेतन शक्ति है और जो उस वस्तु का निर्माण करती है। सूर्य अपनी किरणों से समुद्र का पानी खींचता है, समुद्र के पानी में नमक घुला होता है और सूर्य की किरणें उस में से शुद्ध पानी को नितार लेती है, उस पानी से बादल बनता है, पानी बरसता है और इतना बरसता है कि बरसात नाम का मौसम बन जाता है और धरातल के समुद्र के बराबर ही आकाश का समुद्र बादलों के रूप में उमड़ आता है। आसमान से पानी न बरसे, खेती न हो, त्राहि-त्राहि मच जायेगी और अन्न खाने को नहीं मिलेगा और फल, वनस्पति का निर्माण भी नहीं होगा। दिन-रात होती है, यदि दिन ही दिन रहे तो मुसीबत, रात ही रात रहे तो मुसीबत। दिन में कार्य किया जाता है और रात्रि में विश्राम किया जाता है।

संसार में सूखा न पड़ जाये इसलिए सूर्य समुद्र से पानी खींचता। किन्तु पानी खींचते-खींचते समुंद्र ही न सूख जाये, इसलिए उस पानी से संसार का काम हो जाने पर वही पानी नदियों के रूप में फिर समुद्र में जा पड़ता है। ऐसा चक्र चला हुआ है। यदि यह चक्र न चले तो समुद्र खाली हो जायेगा तथा पानी बरसता है, खेती होती है, और एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु आ जाती है तथा सब घटनायें एक दूसरे के साथ एक निश्चित प्रयोजन से बंधी है। आश्चर्य होता है और विश्वास होता है कि इतना

भारी सुनिश्चित नियम प्रयोजन बिना प्लानिंग व बिना प्लानर हो सकता है। यही चेतन शक्ति है। प्राणी ऑक्सीजन से जीता है और वृक्ष कार्बन से जीता है और वृक्ष ऑक्सीजन फेंकता है, देखने में विपरीत बात है, इसका प्रयोजन रोगों को दूर करना है और इसी से चिकित्सा शास्त्र का जन्म हुआ। पृथ्वी घास से भरी पड़ी है, इससे शाकाहारी प्राणियों को भोजन मिलता है। इस प्रकार इस ब्रह्माण्ड के प्रत्येक जड़ व चेतन अवस्था में कोई शक्ति नियमित रूप से कार्य कर रही है। बस यही निराकार सर्वव्यापक शक्तिष्ठाली अवस्था वाली शक्ति को वेद ईश्वर कहते हैं। इसलिए परमात्मा निराकर सर्वशक्तिमान सच्चिदानन्द है, वह घट-घट में व्यापक है और अपनी महती शक्ति से सारे संसार का पालन, संचालन, उत्पत्ति स्थिति कर रहा है।

ईश्वर ने प्राणियों के हित के लिए अद्भुत पदार्थों की रचना की है-ईश्वर ने अपने कार्य रचना में सृष्टि रचना अदभुत की है क्योंकि सूर्य, चन्द्रमा, तारे व समस्त ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है तथा उन शक्तिशाली पदार्थों की गति तथा स्थिरता बनाए हुए है।

जिस पृथ्वी में हम रहते हैं, पृथ्वी से उन पदार्थों की दूरी, गति व स्थिरता का वर्णन हम यहां कर रहे हैं। कई विद्वानों व ग्रन्थों के आधार पर प्रस्तुतिकरण कर रहे हैं। इसमें कमी ज्यादा भी हो सकती है। हम तो केवल उनकी विशालता दिखाना चाहते हैं। पृथ्वी से सूर्य नौ करोड़ तीस लाख मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से दो लाख चालीस हजार मील दूर है और बिना किसी सहारे के अपनी धूरी पर घूमते रहते हैं और आश्चर्य होता है। इनकी दूरी घटती बढ़ती नहीं है। देखिये चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 17 दिन 7 घन्टे 56 मिनट व 12 सैकन्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर 23 घण्टे 56 मिनट व सैकेण्ड में घूमती है और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक सैकन्ड में 18 मील की दूरी तय करती है और अपनी धूरी पर 1037 मील प्रति घन्टा की रफ्तार से घूमती है। सूर्य का व्यास 8 करोड़ 58 लाख 35 हजार मील है और पृथ्वी से नौ करोड़ तीस लाख मील दूर है तथा पृथ्वी पर प्रकाश की किरणें 8 मिनट में पहुँचती हैं तथा सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है और अपनी धूरी पर 9 घन्टे 55 मिनट में घूमता है और 333 दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है और सूर्य जलता हुआ अग्नि का पिण्ड है और इसकी सतह का ताप मान 6000 डिग्री सेन्टीग्रेट है और यह तापमान सामान्य बना रहता है। अगर पृथ्वी थोड़ी-सी भी सूर्य के नजदीक आ जाए तो पृथ्वी जलकर राख हो जायेगी और थोड़ी-सी भी दूर हो जाए तो पृथ्वी जमकर बर्फ बन जायेगी। यदि सूर्य की किरणें पृथ्वी पर सीधे पड़े तो जीना मुश्किल हो जायेगा। ईश्वर ने व्यवस्था पर इसमें सुरक्षा ओजन किरणें रहती हैं, जिसे ओजन परत कहते हैं।

पृथ्वी का व्यास 7900 मील है। पर्वतों की उचाँई 511 मील है। समुंद्र की गहराई 7 मील है और 3/4 संसार में जल है और संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है यदि उसमें जरासा भी व्यवधान हो जाए तो विराट ब्रह्माण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जायेगा और एक कण के विस्फोट से अनन्त प्रकृति में आग लग सकती है। इसी प्रकार चमकने वाले तारों की संख्या 20 हैं, इसमें व्याध नाम का तारा सर्वाधिक दीप्तमान है और सूर्य की तुलना में यह तारा 21 गुना अधिक है। सूर्य का औसत तापमान 6000 डिग्री सेन्टीग्रेट है औसत पृथ्वी का तापमान 14 डिग्री सेण्टीग्रेट है। पृथ्वी के ऊपर अयन मंडल की पट्टियां हैं जिन्हें आई लेंग स्फीयर कहा जाता है यदि यह पट्टियां न हो तो पृथ्वी जलकर राख हो जायेगी। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में पूर्ण करती है और पृथ्वी की गति प्रति घण्टा एक लाख एक सौ निन्नानवें मील होती है। सूर्य सौर मंडल का व्यास एक शंख अठ्ठारह खरब कि०मी० है। इससे यह प्रतीत होता है यह समूचा ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है। इसका रचयिता केवल परमपिता परमात्मा है।

नोट-उक्त तथ्य विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर लिए गये हैं। इनमें अन्तर हो सकता है। मेरा लिखने का अभिप्राय: केवल सुधी पाठकों में ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों के प्रयोजन द्वारा ईश्वर का धन्यवाद करना है।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

जीवित माता-पिता ही सच्चे पितर हैं

❑ डॉ० जगदेव विद्यालंकार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) 667-ए/29 तिलक नगर, रोहतक

भाद्रपद की पूर्णमासी से आश्विन की अमावस्या तक सोलह दिन के पक्ष (पखवाड़े) को हिन्दू समाज में श्राद्ध-पक्ष के रूप में जाना और माना जाता है। हरयाणवी भाषा में इसे कनागत भी कहते हैं। शताब्दियों से यह मान्यता प्रचलित है कि हमारे जिन पूर्वजों का देहान्त हो चुका है उनकी आत्मा इस पखवाड़े में हमारे निकट आती है और इर्द-गिर्द घूमती रहती है। उनकी तृप्ति के लिए हमें हलवा, खीर आदि स्वादिष्ट और पौष्टिक खाद्यपदार्थ कुत्ते और कौवे आदि को खिला देने चाहिये तथा जन्मना ब्राह्मणों को भी आमन्त्रित करके भोजन से तृप्त कर देना चाहिये, इससे हमारे पूर्वज स्वत: तृप्त हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को पितरों के प्रति श्राद्ध और तर्पण कहा जाता है।

इस विषय पर हमें बुद्धिपूर्वक विचार करना चाहिये। आत्मा और शरीर के संयोग को जन्म और वियोग को मृत्यु कहते हैं। उपनिषद् आदि शास्त्र कहते हैं कि जैसे एक कीड़ा पिछले पैरों को उठाते ही अगले पैरों को आगे रख देता है, उसी प्रकार एक क्षण में एक जीवात्मा मृत शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसी बात को गीता में इस प्रकार से कहा है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

अर्थात् जैसे एक मनुष्य पुराने फटे कपड़ों को उतारकर नये धारण कर लेता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने जीर्ण शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है।

अब प्रश्न उठता है कि हमारे मृत पूर्वज (पितर) जो अगला शरीर धारण कर चुके हैं, वे श्राद्ध-पक्ष में हमारे निकट कैसे आ सकते हैं? और फिर सृष्टि के नियम के अनुसार उन दिवंगत आत्माओं को अपने पूर्वजन्म की एवं तत्सम्बन्धी परिजनों की कोई स्मृति नहीं रहती, इस दृष्टि से भी वे हमारे पास किसी प्रकार से लौटकर नहीं आ सकते। अत: यह सिद्ध होता है कि प्रचलित मान्यता वैज्ञानिक, शास्त्रसम्मत, बुद्धिसंगत एवं तर्कसंगत नहीं है। यह कुछ अज्ञानी एवं स्वार्थी लोगों द्वारा चलाई हुई भोले-भाले समाज को गुमराह करने के लिए एक रूढ़िमात्र है। अथवा यह कहिये कि यह सच्चा श्राद्ध एवं तर्पण नहीं, अपितु एक अन्धश्रद्धा और अन्धविश्वास है।

विचारणीय बात यह है कि यदि हमारे द्वारा प्रदत्त भोजन से ही उनकी तृप्ति होती है तो वर्ष के केवल पन्द्रह दिन ही क्यों, पूरा वर्ष क्यों नहीं? क्या वे साढ़े ग्यारह महीने तक भूखे ही रहते हैं? अत: इस प्रचलित मान्यता में थोड़ा-सा संशोधन कर लेना जरूरी है। मरे हुए पूर्वजों को पितर नहीं कहा जाता, अपितु जो हमारे जीवित माता-पिता और दादा-दादी आदि हैं, उन्हीं को पितर कहना और मानना चाहिये और केवल पन्द्रह दिन नहीं, अपितु वर्ष भर आरोग्यवर्धक, सात्त्विक भोजन आदि से श्रद्धा और सत्कार पूर्वक उनकी तृप्ति करनी चाहिये, जिससे वे निरन्तर स्वस्थ व प्रसन्न रहें तथा हमें आशीर्वाद देते रहें। इसी को सच्चा श्राद्ध और तर्पण कहा जाता है। शास्त्रानुसार इसको पितृयज्ञ भी कहा जाता है, जिसकी परिभाषा है-**"येन कर्मणा विदुषो देवानृषीन् पितृंश्च तर्पयन्ति सुखयन्ति तत् तर्पणम् तथा यत्तेषां श्रद्धया सेवनं क्रियते तच्छ्राद्धं वेदितव्यम्"** अर्थात् तर्पण उसे कहते हैं, जिस कर्म से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं। उसी प्रकार जो उन लोगों का श्रद्धा से सेवन करना है, सो श्राद्ध कहाता है। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जो प्रत्यक्ष हैं उन्हीं में घटता है, मृतकों में नहीं।

आज हमारे समाज में वास्तविक श्राद्ध, तर्पण अर्थात् पितृयज्ञ का अभाव होता जा रहा है। इसलिये स्थान-स्थान पर वृद्धाश्रम खुलते जा रहे हैं। आज स्थिति यह है कि 'जीवित पितर से दंगमदंगा, मरने पर पहुँचावें गंगा।' हम अपने माता-पिता आदि बड़ों से अच्छा व्यवहार नहीं करते, जिसके कारण वे दु:खी रहते हैं। हमें उनकी सेवा और शुश्रूषा दोनों ही करनी चाहिए। शुश्रूषा का अर्थ है सुनने की इच्छा। अर्थात् हमारे बड़े यदि कुछ कहना चाहें तो उनको धैर्यपूर्वक हमें अवश्य सुनना चाहिये ताकि वे स्वयं को घर में फालतू और उपेक्षित न समझने लगें। केवल भोजन छादन और दवा आदि आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति कर देना मात्र ही पितृयज्ञ नहीं कहलाता, अपितु हमें सावधानी से ऐसा व्यवहार करना चाहिये, जो उन्हें अच्छा लगे और वे प्रसन्न रहें। यदि वास्तविक श्राद्ध और यही तर्पण है। इसी को पितृयज्ञ कहते हैं। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि जीवित माता-पिता ही सच्चे पितर हैं।

वेदों के आचरण से ही मनुष्य को अभ्युदय एवं निःश्रेयस प्राप्त होते हैं

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमें मनुष्य जीवन जन्म-जन्मान्तरों में दुःखों से सर्वथा निवृत्त होने के लिए एक अनुपम साधन मिला है। यह हमें

परमात्मा द्वारा प्रदान किया गया है। माता-पिता, सृष्टि तथा समाज हमारे जन्म, इसके पालन व उन्नति में सहायक बनते हैं। हमें अपने जीवन के कारण व उद्देश्यों पर विचार करना चाहिये। इस कार्य में वेद व वैदिक साहित्य हमारे सहायक होते हैं। बिना वेद व वैदिक साहित्य के हम मनुष्य जीवन के सभी रहस्यों को भली प्रकार से नहीं जान सकते। वेद व वेदानुकूल ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर हमारे जीवन की गुत्थी सुलभ हो जाती है। वेदाध्ययन से ही ज्ञात होता है हमारा यह संसार तीन अनादि व नित्य पदार्थों ईश्वर, जीव तथा प्रकृति से मिलकर बना व संचालित हो रहा है। हम जीव कहलाते हैं जो अनादि व नित्य सत्ता हैं। हमारी आत्मा की कभी उत्पत्ति नहीं हुई है और न कभी इसका नाश वा अभाव ही होता है। यह संसार में सदा से है और सदा रहेगा। हमारा जीवात्मा सूक्ष्म एवं अल्प परिमाण वाला है। मनुस्मृति में इसका परिणाम बताते हुए कहा गया है कि सिर के बाल के अग्र भाग के यदि 100 टुकड़े किये जायें तथा उस एक सौवें टुकड़े के भी सौ भाग किये जायें तो जो बाल के अग्रभाग का जो दस हजारवां भाग है, उसके बराबर व उससे भी सूक्ष्म हमारा जीवात्मा है।

हमारा यह आत्मा चेतन सत्ता है। चेतन सत्ता (ईश्वर व जीव) ज्ञान व कर्म करने की शक्ति से युक्त होते हैं। इसके लिये जीवात्मा को मनुष्य या अन्य प्राणी योनियों में से किसी एक योनि में जन्म लिलना आवश्यक होता है। मनुष्य योनि सभी प्राणी योनियों में सबसे श्रेष्ठ है। मनुष्य योनि में ही यह सम्भव है कि हम ईश्वर व प्रकृति का ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह ज्ञान वेदों के द्वारा उपलब्ध होता है। ज्ञान का मूल ईश्वर व उसका ज्ञान वेद ही है। यदि ईश्वर न होता तो न तो वेद होते और न ही यह ईश्वर रचित व संचालित संसार ही होता। प्रश्न होता है कि क्या ईश्वर ने यह संसार अपने किसी सुख के लिए बनाया? इसका उत्तर मिलता है कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है। वह हर काल में आनन्द से युक्त है। वह अपने लिये संसार नहीं बनाता। उसका स्वभाव धार्मिक, दयालु, न्यायकारी व करुणा से युक्त है। जीव असहाय व अल्प शक्ति से युक्त सत्ता हैं। इनको सुख देने व मोक्ष आदि का अमृतपान कराने के लिये ही परमात्मा ने इस संसार को रचा है व इसे चला रहा है। ईश्वर के गुणों व कर्तव्यों को जानकर हमें भी उसके अनुसार ही आचरण व व्यवहार बनाना व करना है। इसी में मनुष्य जीवन व आत्मा की सार्थकता व सफलता होती है। ईश्वर को यथार्थरूप में जान लेने तथा वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य का जीवन व कर्तव्य पथ प्रशस्त हो जाता है। वेदों के अधिकांश रहस्यों को ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। मानव जीवन को इसके उद्देश्यानुसार चलाने व जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कराने में सत्यार्थप्रकाश की महती भूमिका है। जो बन्धु वेद और सत्यार्थप्रकाश आदि वैदिक साहित्य की उपेक्षा करते हैं, वह सत्य ज्ञान को प्राप्त न होने से अपने जीवन को उसके उद्देश्य व लक्ष्य की ओर न चलाकर उससे प्राप्त होने वाले लाभों से संचित रह जाते हैं। अतः सबको वेद ज्ञान की प्राप्ति के लिये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, उपनिषदों, दर्शनों, मनुस्मृति सहित वेदों का अध्ययन करना चाहिये। इससे मनुष्य को ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि विषयक आवश्यक ज्ञान प्राप्त हो जाता है और कर्तव्य व सत्य आचरणों के द्वारा वह जीवन के चार पुरुषार्थों को प्राप्त होकर अपने मनुष्य जीवन को सफल करता है।

वेदों से ही हमें ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप सहित भौतिक जगत के उपादान कारण प्रकृति विषयक यथार्थ ज्ञान भी प्राप्त होता है। वेदाध्ययन से हमें विदित होता है कि ईश्वर एक सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। ईश्वर सर्वज्ञ है। वह जीवों को उनके कर्मानुसार जन्म व मरण की व्यवस्था सहित उन्हें सुख व दुःख प्राप्त कराता है। ईश्वर ने

अपना व संसार का परिचय देने के लिए ही सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न ऋषियों व मनुष्यों को वेदज्ञान दिया था। वेद न होते तो हमें ईश्वर, आत्मा व सृष्टि का परिचय कदापि प्राप्त न होता। हमें संसार की आदि भाषा, जो सभी भाषाओं की जननी है, वह भी परमात्मा से वेदों के द्वारा ही मिली है। वेदों की भाषा संस्कृत संसार की समस्त भाषाओं से उत्कृष्ट भाषा है। इसका ज्ञान इसका अध्ययन कर ही प्राप्त किया जा सकता है। हमारे समस्त ऋषि व विद्वान् इस वेद भाषा व वेदज्ञान को सर्वोत्तम व आनन्ददायक जान व अनुभव कर अपना समस्त जीवन वेदाध्ययन एवं वेदाचरण में ही व्यतीत किया करते थे। ऋषि दयानन्द ने हमें वेदों के प्रायः सभी रहस्यों से अपने वेद प्रचार, उपदेशों, जीवन चरित तथा अपने ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय तथा वेदभाष्य आदि के माध्यम से परिचित व उपलब्ध कराया है। इस समस्त साहित्य का अध्ययन करने सहित उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति आदि प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन कर हम मानव जीवन को सुखी व उन्नत बना सकते हैं। ऐसा करते हुए हम आत्मा को ईश्वर की उपासना से प्राप्त होने वाले सुख व आनन्द का भी अनुभव कर सकते हैं। वेदाध्ययन व वेदों के अनुसार आचरण करने से मनुष्य की आत्मा की उन्नति होकर उसे इस जीवन में सुख तथा परजन्म में सुखद परिस्थितियां व उत्तम परिवेश प्राप्त होता है जो उसे अमृत व मोक्ष की ओर ले जाता है। अतः मनुष्य को वेदाध्ययन अवश्य ही करना चाहिये और ऐसा करते हुए वेदानुसार जीवन व्यतीत करते हुए उसे अपने देश, समाज व परिवार के प्रति कर्तव्यों को पूरा करना चाहिये। जो मनुष्य वेदों का अध्ययन व उसके अनुसार आचरण करते हैं वह आत्मा को क्लेशरहित उत्तम अवस्था प्रदान करते हैं। जो मनुष्य वेदों से दूर रहते, उनकी आलोचना करते अथवा मत-मतान्तरों की बातों में फंसे रहते हैं, उनकी आत्मा वेदज्ञानियों के समान उन्नत नहीं होती। इस जन्म में तो वह पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार कुछ सुख भोग सकते हैं परन्तु उनका परजन्म अर्थात् मृत्यु के बाद का पुनर्जन्म श्रेष्ठ योनियों व उत्तम सुखों से युक्त नहीं होता। हमारा परजन्म उन्नत व सुखी तभी बनता है कि जब हम अपने वर्तमान जन्म में वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए शुभ, श्रेष्ठ व उत्तम कर्मों को करें। वेदानुकूल, शुभ व पुण्य कर्मों का फल ही जन्म-जन्मान्तरों में सुख व उन्नति हुआ करता है और वेदों की शिक्षाओं के विपरीत आचरण व व्यवहार करने का परिणाम वर्तमान जन्म व परजन्म में दुःख व पतन हुआ करता है। यह युक्ति एवं तर्क से सिद्ध सिद्धान्त है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर इन बातों को जाना जाता है और अपना सुधार किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से ऋषि दयानन्द ने जी ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को लिखा है। सत्यार्थप्रकाश मनुष्य को वेद, परमात्मा तथा मोक्ष की प्राप्ति के साधनों से जोड़ता है व उन्हें प्राप्त कराने में सहायक होता है। अतः सबको सत्यार्थप्रकाश एवं वेदाध्ययन का लाभ उठाना चाहिये। मनुष्य का आत्मा अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, अविनाशी तथा अमर है। जन्म व मरणधर्मा होने से इसके जन्म व मृत्यु होते रहते हैं। जन्म व मृत्यु दोनों ही दुःख देने वाले होते हैं। जीवन में सुख भी मिलता है। संसार में सुख अधिक और दुःख कम हैं। यदि हम शुभ कर्मों का ही आश्रय लें तो हमारे जीवन में सुख अधिक होंगे तथा दुःख कम होंगे। दुःखों को पूरी तरह से दूर करने का एक ही उपाय हैं कि हम मोक्ष के साधनों को जानें और उनका आचरण करें। मोक्ष संबंधी शंकाओं को दूर करने के लिए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में विस्तार से विचार प्रस्तुत किये हैं और इसके समर्थन में प्राचीन वैदिक साहित्य से प्रमाण दिये हैं। सब मनुष्यों को इस अध्याय को अवश्य पढ़ना व समझना चाहिये। यदि हम मोक्ष के साधनों को अपनाते हैं तो इसे हम जीरो रिस्क वाला कह सकते हैं। इसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने से हमें हानि कुछ नहीं होती और लाभ बहुत बड़ा होता है। हमारे ऋषि मुनि बहुत विद्वान् व ज्ञानवान् होते थे। उन्होंने परीक्षा व विवेचना कर मोक्ष प्राप्ति को ही सर्वोत्तम सुख बताया है। इसी के लिये सब मनुष्यों को प्रयत्न करने चाहियें। मोक्ष की प्राप्ति होने पर हमें ईश्वर के सान्निध्य में उस जैसा परमानन्द प्राप्त होता है और हम मोक्षावधि 31 नील 10 खरब वर्ष से अधिक अवधि के लिये दुःखों से पूरी तरह से निवृत्त हो जाते हैं। अतः वेदों व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों सहित समस्त वैदिक सत्साहित्य से हमें लाभ उठाना चाहिये। इसी से हमारा व समस्त मानव जाति का कल्याण होगा। मनुष्य जीवन के कल्याण का वेद मार्ग से उत्तम दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

बलिदान व संघर्ष की गाथा

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

सत्य जब जुल्म द्वारा दबाया जाता है, तो आन्दोलन होते हैं। किसी पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिये श्रद्धा का

भाव मन में रखकर सुनियोजित ढंग से सांगठनिक रूप में बनाकर अन्याय से टक्कर ही आन्दोलन है। आज तो बात-बात पर कुछ भाइयों से हम आन्दोलन करने की बात सुनते रहते हैं। इससे शब्द व संगठन दोनों की गरिमा कम होती है। किये गये आन्दोलन के भी दो रूप बन जाते हैं। एक में होती है हताशा, निराशा व समझौता। यह रूप उस पक्ष का होता है जहाँ नाम व सुख की चाहना होती है। दूसरी ओर केवल अर्जुन की तरह लक्ष्य ही दिखाई देता है, धन ही ध्यान का कारण बन जाती है, ध्यान धुन में रम जाता है। यहाँ बलिदान व संघर्ष की गाथाएँ लिखी जाती हैं। कभी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था—

''आजादी के मसले पर समझौते नहीं, युद्ध हुआ करते हैं, सन्धियाँ नहीं, बलिदान हुआ करते हैं।''

ऐसी ही बलिदान व संघर्ष की गाथा हिन्दी सत्याग्रह में लिखी गई थी। लेखक भावोद्वेग से तात्कालिक अभिरुचि, लेखन सीमा के अनुरूप ही ऐसे इतिहास से प्रसंग उठाता है। सभी प्रसंग अनुकरणीय होते हैं। इस इतिहास से जुड़े प्रत्येक नेता व कार्यकर्त्ता को मेरा कोटि-कोटि नमन। यहाँ संक्षेप में कुछ प्रसंग देते हैं।

पृष्ठभूमि-आर्यसमाज को हिन्दी प्रेम अपने आचार्य महर्षि दयानन्द से घुट्टी में मिला। इस प्रेम में ऋषि का राष्ट्रप्रेम व जातीय संगठन की भावना कैसे समाहित थी, वह आप बाबू श्री देवेन्द्रनाथ के इस शब्दों में देख सकते हैं—''...वह समस्त भारत में एक शास्त्र अर्थात् वेदशास्त्र को स्थापित करने के लिए आजीवन संग्राम करते रहे, वैसे ही वेद प्रतिपादित एक अद्वितीय परमेश्वर की उपासना को प्रतिष्ठित करने के लिए भी मन, वचन, कर्म से चेष्टा करते रहे। ...वैसा ही प्रबल परिश्रम उन्होंने इसके निमित्त भी किया था कि आर्यावर्त्त में आदि से अन्त तक एक भाषा प्रचलित हो जाए। वस्तुतः इसी उद्देश्य से उन्होंने हिन्दीभाषा को आर्यभाषा, अर्थात् समस्त आर्यावर्त में प्रचलित भाषा का नाम दिया था...।''

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं—''राष्ट्रभाषा का जो प्रश्न 50 वर्ष बाद उठने वाला था, उसे कार्यरूप में परिणत करके राष्ट्र को ठीक मार्ग बतलाने में महर्षि ने आदि पथ प्रदर्शक का काम किया।'' पाठकगण! ऐसे ही प्रसंगों के चलते उन्हें युगद्रष्टा कहा गया। मातृभाषा गुजराती होते हुए, संस्कृत के महापण्डित होते हुए भी उन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना आर्यभाषा (हिन्दी) में की। एक संन्यासी का राष्ट्र के प्रति यह अतुल्य समर्पण है। नाम व दाम की परवाह न करते हुए उनके प्यारे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना प्रसिद्ध पत्र हिन्दी में निकालना आरम्भ किया। पंजाब व यू०पी० में आर्य कन्या पाठशालाओं के सुखद परिणाम स्वरूप कन्याओं व स्त्रियों के माध्यम से पुरुषों का हिन्दी से परिचय हुआ। नारी शक्ति का राष्ट्र के निर्माण में प्रयोग व नारी की गरिमा को प्रकाशित करने में आर्यसमाज के योगदान का यह भी एक अद्वितीय उदाहरण है। ये वही आदर्श थे जिन्होंने आर्यों को हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के लिये प्रेरित किया। जून 1957 में यह सत्याग्रह आरम्भ हुआ जो बलिदान व संघर्ष की एकअमर गाथा है। सभी इससे जुड़ी दिवंगत आत्माओं व जीवित धर्मवीरों को हम श्रद्धाभाव प्रकट करते हैं। बलिदान व संघर्ष के दो प्रसंग यहाँ देते हैं—

बलिदान-वेद का घोष है **''यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।''** अर्थात् हे मित्र, हे परमात्मा! जो आपको सर्वस्व समर्पण करता है, आप उसका कल्याण करते हैं। पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जो भावनाएँ होती हैं, उनका फलीभूत होना ही भावना रखने वाले का कल्याण है, यही उसकी अमरता है। ऐसी ही भावना लेकर नयाबांस ग्राम जिला रोहतक का युवक सुमेरसिंह सत्याग्रह में जेल में गया व बलिदान देकर अमर पद को प्राप्त कर गया। कैरों राज की क्रूरता, कायरता व छल के चलते जेल में ही बन्द बदमाशों ने जो भी हथियार रूप में उपलब्ध हुआ उसे ही

हाथ में लेकर 24 अगस्त 1957 में दोपहर बाद 4.15 बजे (स्वामी नित्यानन्द के अनुसार) सत्याग्रहियों पर भयंकर आक्रमण कर दिया। धर्मवीर युवक श्री सुमेरसिंह को भयंकर चोटें आईं, फिर भी घायल शेर श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' को कह रहा था, ''मेरी चिन्ता मत करें, दूसरों की सुधि लें।'' धन्य है ऐसी जननी जो ऐसे धर्मवीरों को जन्म देती हैं। लेकिन आज इसी धरा पर ऐसे कुल-कपूत पैदा होने लगे हैं, जो जातीयता की आड़ में धर्म को दांव पर लगाते फिरते हैं। ऐसी लीडरी किस काम की? ऐसा पैसा किस काम का? ऐसे लोग किसी समुदाय की हितैषी नहीं हो सकते। शहीद सुमेरसिंह की जय। वैदिक धर्म की जय। सर्वत्र आर्यावर्त में हिन्दी अपनाओ की गूंज सुनाई दे। हिन्दी प्रचार में आर्यसमाज के योगदान को सर्वत्र याद किया जाए, तभी 14 सितम्बर 'हिन्दी दिवस' की सार्थकता हो सकती है।

संघर्ष-आन्दोलनों में श्रद्धा से लगे लोग आन्दोलन के दौरान और बाद में भी पीड़ा पाते हैं। लेकिन यही तप उन्हें आनन्द देता है, इस मार्ग पर और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। 1857 की क्रान्ति के बाद भयंकर अत्याचार हुए। इसी प्रकार के अत्याचारों की झलक हिन्दी सत्याग्रह के बाद गुरुद्वारा सिग्रेट केस में श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी को दी गई यातनाओं में दिखाई देती है। स्मरण रहे कि इनके नेतृत्व में 42 व्यक्तियों के जत्थे ने गिरफ्तारी दी थी। फिरोजपुर जेल कारागार में आर्यसमाज का सत्संग दोनों समय होता था। इन्हें जेल में आर्यसमाज का मंत्री बनाया गया। आपके बड़े भाई यश जी जिनका आशीर्वाद आपसे पहले ही मुझे मिल गया था ('जिज्ञासु' जी से मेरा परिचय बाद में हुआ) वे भी तथा आपकी माता जी भी सत्याग्रह में जेल गए।

गुरुद्वारा सिग्रेट केस में श्रीयुत् 'जिज्ञासु' जी गो ग्यारह दिन व ग्यारह रात शरीर व मन को तोड़ने वाली यातनाएँ दी गईं। डण्डा को पैरों पर रखकर डण्डे पर पुलिस वालों का खड़ा होना और पिटाई के निर्लज्ज ढंग...। चारपाई के पांवों के नीचे इनके हाथों को रखकर उन पर बैठ जाना, बड़े-बड़े बल्वों की ओर टिकटिकी लगाकर देखने को बाध्य करना, सोने न देना...। मल से भरा डिब्बा दिखाकर उसे खाने के लिये कहना, मना करने पर उसमें रस्सी डुबोकर मुंह पर बांधना...। इस झूठे केस को इन पर मढकर इनसे और आर्य नेताओं का नाम झूठ रूप में उगलवाना चाहते थे। लेकिन लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द के आदर्श को इन्होंने मिटने न दिया। श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' प्राय: लिखते हैं- ''मरने वाले जी रहे हैं, जीने वाले हैं कहाँ?'' हम तो इस प्रसंग में कहेंगे, ''मरने वाले जी रहे हैं और जीने वाले भी हैं अब यहाँ।''

विघटनकारियो! शर्म करो-हम आर्य साहित्य में अनेक ऐसे उदाहरण पढ़ते हैं, जब दलित परिवार में जन्मे भाइयों ने धर्मरक्षा के लिए पीड़ाएँ झेली, बलिदान दिए। स्वामी बेधड़क का नाम आर्यसमाज के पूज्य प्रथम श्रेणी के तपस्वी, त्यागी, महात्मा, प्रचारकों में रहेगा। हरियाणा के कैथल जिला से दलित परिवार में जन्मे श्री फकीरचन्द 22 वर्ष की आयु में हैदराबाद सत्याग्रह में गए व बलिदान दिया। बाद में इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री अजीत ने हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया व कारावास में राष्ट्रहित कष्ट झेले। आज कुछ दल दलित भाइयों को धर्म से अलग करने के प्रयास में ही जुटे रहते हैं। मनु, राम का विरोध ही इनका काम रह गया है। इन लोगों का दलितोद्धार से कुछ लेना देना नहीं। मनु के नाम व काम में आस्था रखने वाले आर्यसमाज ने दलितोद्धार के लिए जो कुर्बानियाँ दीं उनका तो एक अलग ऐतिहासिक ग्रन्थ बन सकता है। मर्माहत करने वाली बात कि क्षत्रिय कुल में जन्मे कुछ व्यक्ति भी बाबर व औरंगजेब जैसे लुटेरे, विधर्मी, हत्यारों की प्रशंसा व वैदिक धर्म की निन्दा करने लगे हैं। ध्यान रखो, विदेशी बम्ब-विस्फोटों से ही हत्या नहीं करते वे वैचारिक विस्फोटों से भी राष्ट्र को जलवाते, मरवाते, लड़वाते हैं। मूर्ख को पता ही नहीं चलता तुझे मूर्ख बनाने वाली शृंखला की पहली कड़ी कहाँ है। क्या पता पहले की भी अनेक कड़ियों को यह पता न हो? अत: विघटनकारी विचार रखने वाले या तो धूर्त होते हैं या मूर्ख। आओ आर्य बनें और आर्य बनायें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये। सम्पर्क-मो० 08901387993

वेद में प्रभात वेला का चमत्कार

(साम० 1351) संसार में वास्तविक सुन्दरता और तेज आकर्षण की चमक-दमक प्रकृति में ही है। प्रकृति में हर प्रकार की विचित्रता और प्रचुरता है। आनन्द, स्वास्थ्य, आरोग्य की तो हम सीमा नहीं पा सकते। स्वास्थ्य की इस अधिकता का रसपान करके ही संसार के सारे पशु-पक्षी, जीव-जन्तु अपने जीवन का आनन्द उठाते हैं। जीवन का प्रारम्भ प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में जागने से होता है। प्रात:काल उठने के अनेक लाभ हैं। प्रात: की वायु स्वास्थ्यप्रद व दोषरहित होती है। इसके सेवन से बल की वृद्धि होती है, मुख की कान्ति बढ़ती है, मन सदा प्रसन्न रहता है और बुद्धि तीव्र होती है। शरीर के समस्त अंग नीरोग रहते हैं। प्रात: उठने से शरीर में स्फूर्ति व चुस्ती आती है। प्रकृति के इस वरदान से हम अपने को कभी भी वंचित न करें। प्रात:काल में उठना मनुष्य के स्वास्थ्य, मन, बुद्धि व आत्मा सभी के लिए परम उपयोगी है। यह शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार करती है। कुम्हलाये मुखमण्डल प्रतिदिन प्रात: तरुण, ताजा हो जाते हैं।

प्रभात की वेला में इस सुहावनी मंद ताजा पवन के झोंके शरीर के रोम-रोम में स्फूर्ति भर देते हैं और जीवन के निर्माण, उत्थान और विकास के लिए हमारे अन्त:करण में नवचेतना और नवजीवन की ज्योति प्रज्वलित होती है।

(साम० 421) इस मन्त्र में उष:काल का बहुत ही चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य और प्रभाव का वर्णन किया गया है। उष:काल का समय प्रकृति में शोभा और सौन्दर्य को भर देता है। जिस ओर दृष्टि डालिये, इस समय मनोहर दृश्य नयनाभिराम होता है। स्वर्णिम प्राची संसार की प्रत्येक वस्तु को सुनहरा बना रही है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दूर्वा पर झिलमिलाते ओस-कण अपना अनोखा सौन्दर्य बिखेर रहे हैं। इस समय न केवल ओस-कण दूब पर मोती-से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों और वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस बूँद-बूँद करके टपकने लगती है। उधर-फूल भी खिलने लगते हैं। अस्वस्थ से अस्वस्थ व्यक्ति का इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। मन में कुछ उत्साह सञ्चारित हो जाता है। इस समय नाना प्रकार के पक्षी मस्त होकर गाते हैं। पौ फटने पर एक साथ चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव और न जाने कितने प्रकार की ध्वनियाँ सारे वायुमण्डल को सङ्गीतमय बना देती हैं। जो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति चाहते हैं, उन्हें ब्रह्ममुहूर्त में, प्रात: चार बजे के लगभग, बिस्तर छोड़कर खुली ताजा वायु में अवश्य आ जाना चाहिये।

–जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म.नं. बी. 103 फ्लोवर 10, स्पेज परिवी सेक्टर-72, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

आर्यसमाजी एवं स्वतन्त्रता सेनानी की धर्मपत्नी पार्वती देवी का निधन

आर्यसमाजी एवं स्वतन्त्रता सेनानी कैप्टन कंवलसिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी निवासी बहादुरगढ़ जिला झज्जर का 90 वर्ष की आयु में 31 अगस्त 2020 को आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमती पार्वती देवी का जन्म गांव बाघपुर (बेरी) जिला झज्जर में 1930 में प्रसिद्ध आर्यसमाजी परिवार चौ० शीशराम के घर पर हुआ था। इनके बड़े भाई प्रो० शेरसिंह केन्द्रीय मंत्री व सभा के अनेक वर्षों तक प्रधान रहे। छोटे भाई श्री ओमप्रकाश बेरी विधायक व श्री विजय कुमार IAS रहे। माता जी के अन्दर देशभक्ति एवं वैदिक संस्कार का विचार बाल्यावस्था से ही मिले थे। इनके पति सुभाषचन्द्र बोस के ए.डी.सी. के पद पर रहे। उन्होंने देश की आजादी के लिये अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ भारत में ही नहीं विदेशी भूमि पर भी लम्बी लड़ाई लड़ी। इनका राजकीय सम्मान के साथ रामबाग श्मशान घाट बहादुरगढ़ जिला झज्जर में वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ दाह-संस्कार किया गया। दाह-संस्कार के समय नायब तहसीलदार कनकसिंह व हरयाणा पुलिस की टुकड़ी ने हवाई फायर व शस्त्र उल्टे कर अंतिम सलामी दी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे एवं व्यथित परिवार को इस विकट दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

–सत्यवान आर्य, स० कार्यालयाधीक्षक

शोक-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कोलेजियम सदस्य व आर्यसमाज के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता डॉ० शमशेरसिंह आर्य, गांव सिंहपुरा कलां, रोहतक की पूज्या माताजी श्रीमती छोटीदेवी (धर्मपत्नी स्व० श्री महासिंह जी) का स्वर्गवास दिनांक 4 सितम्बर 2020 को प्रात: 3.30 बजे हो गया। वे 89 वर्ष की थीं। आर्य प्रतिनिधि सभा के पुरोहितों के मार्गदर्शन में पूर्ण वैदिक रीति से उनका अंतिम संस्कार किया गया। पूज्या माताजी आजीवन संघर्ष व निष्ठा की प्रतिमूर्ति थी। अंतिम संस्कार में आर्य प्रतिनिधि हरयाणा की तरफ से श्री शेरसिंह कार्यालयाधीक्षक, श्री सत्यवान आर्य सहायक कार्यालयाधीक्षक, वैद्य रमेश आर्य, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री सत्यपाल आर्य 'मधुर' भजनोपदेशक व बड़ी संख्या में परिवार व आस-पास के क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। उनकी श्रद्धांजलि सभा व शांतियज्ञ 10 सितम्बर को उनके निवास स्थान पर आयोजित की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे एवं व्यथित परिवार को इस विकट दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

–सत्यवान आर्य, स० कार्यालयाधीक्षक

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

प्रेरक वचन

- ऊँची छलांग लगाने के लिए पहले पीछे हटना पड़ता है।
- भविष्य का भय वर्तमान को नष्ट करता है।
- प्राप्त वस्तु का सदुपयोग ही परिस्थिति का सदुपयोग है।
- संकट में अवसर भी छिपा होता है।
- शब्द संवेदनाओं के सूत्रधार होते हैं।
- इन्सान गलतियों का पुतला है।
- आसानी से सिर्फ धोखा मिल सकता है।
- प्रेम तमाम दु:खों की दवा है।
- अतीत की स्मृति और भविष्य के सपनों के बीच वर्तमान हमेशा पिसता है।
- स्पष्ट लक्ष्य के साथ ही सफलता सुनिश्चित होती है।
- सपने पुरुषार्थ से ही पूरे होते हैं।
- जो अवसर को पकड़ ले, वही सफल है।
- आचरण के बिना ज्ञान केवल भारमात्र होता है।
- विचार कर्म की बीज है।
- निजी हित अवसर समाज का अहित करते हैं।
- जो भीतर से शान्त है उसे कोई बाहरी वेदना परेशान नहीं कर सकती।
- भाव और विचार की अभिव्यक्ति ही साहित्य है।

संकलन–भलेराम आर्य गांव-सांघी (रोहतक)

आचार्य श्री वेदमित्र के सानिध्य में जौली सोनीपत के उदीयमान मोनू B.teck ने युवा साथियों के साथ बृहद् यज्ञ का आयोजन किया। 4 जोड़े यज्ञमान व बृद्ध एवं बालक सम्मिलित हुए। युवा राष्ट्र के संरक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

कोरोना को हराना है देश को जिताना है

- लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग की लक्ष्मण रेखा का पालन करें।
- घर के बुजुर्गों का रखें ख्याल
- देश के कोरोना योद्धाओं का सम्मान करें।
- मॉस्क लगाये, अपना जीवन सुरक्षित करें।
- रोजाना हवन करें और पर्यावरण को शुद्ध करें।
- अपने घर व आसपास में सैनेटाइज करें।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक

श्री .....

पता .....

.....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा